ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मन्त्रश्रुत्यं चरामसि। सामवेद 176
हम वेद मन्त्र के अनुसार आचरण करें।
We should behave & Perform in accord with the advice of Vedic hymns.

वर्ष 39, अंक 23 एक प्रति : 10 रुपये
सोमवार 11 अप्रैल, 2016 से रविवार 17 अप्रैल, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 10
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, आर्यसमाज के भामाशाह, हम सबके प्रेरणास्रोत, 93 वर्ष के वयोवृद्ध युवा

महाशय धर्मपाल जी के जन्मोत्सव पर कार्यक्रम 'इदन्न मम्' सम्पन्न

जो कुछ भी आर्यसमाज से सीखा, उसे समाज सेवा में समर्पित करने हेतु आपका आशीर्वाद चाहता हूं और आप सब भी अपने जीवन के कुछ भाग को समाज सेवा हेतु समर्पित कर सकें ऐसा आशीर्वाद देना चाहता हूं – महाशय धर्मपाल

महाशय धर्मपाल जी के 93वें जन्मदिवस के अवसर पर सुपुत्र महाशय राजीव गुलाटी एवं पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ यज्ञ करते हुए। आर्य जगत् के वैदिक विद्वान श्री आचार्य डॉ. वागीश शर्मा जी के ब्रह्मत्व एवं वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ स्वस्ति याग हुआ।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा एवं सेवा के नए प्रकल्पों का निर्माण होगा

आर्यसमाज से अछूते क्षेत्र गोवा, अंडमान-निकोबार, तमिलनाडु आदि में कार्य का होगा विस्तार

जन्मदिवस समारोह के अवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएं देने हेतु पधारे आर्यजन, संन्यासी, विद्वत्जन, विभिन्न गुरुकुलों एवं विद्यालयों के विद्यार्थीगण

आर्य संन्यासियों से प्राप्त किया आशीर्वाद

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी

आचार्य विजयपाल जी

स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती जी

साध्वी उत्तमायति जी

स्वामी धर्मदेव जी

श्री सत्यानन्द आर्य जी

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी

स्वामी सदानन्द जी सरस्वती

जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर बच्चों की प्रस्तुतियां

महाशय धर्मपाल का 93वां जन्मदिवस स्वस्तियाग एवं इदन्न मम् कार्यक्रम के साथ सम्पन्न

आर्यसमाज के संस्कारों ने मेरे जीवन में संजीवनी का कार्य किया – महाशय धर्मपाल

महाशय जी ने आर्यसमाज का मिशन आगे बढ़ाया – स्वामी सुमेधानन्द

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान प्रशिक्षण केन्द्र के साथ आर्यसमाज के सेवा कार्यों का भी विस्तार होगा

महाशय धर्मपाल जी की सगठन एवं प्रचार कार्य की सोच हम सबके लिए प्रेरणा – सुरेशचन्द्र आर्य

वरिष्ठ आर्य नेता, कर्मठ समाज सेवी, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, विश्वप्रसिद्ध सफल व्यवसायी, कर्मयोगी, दानवीर भामाशाह, संकल्प के धनी, करुणा की प्रतिमूर्ति, अनेक महानुभावों के प्रेरणास्रोत, समाजोत्थान के लिए सतत् कार्यरत, निर्बल वर्ग की शिक्षा, चिकित्सा, सेवा तथा धर्म के कार्यों में रत अनेक संस्थाओं के संस्थापक एवं निर्माणकर्ता, अनेकोनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं के पूर्तिदाता, सुविख्यात गौभक्त, आर्ष विद्या के प्रबल पोषक, वेद भक्त, यज्ञीय भावना से ओत-प्रोत, दैनिक याज्ञिक, वर्तमान में भी अनेक संस्थाओं का नेतृत्व एवं उत्तरदायित्व का निर्वहन करने वाले, गुरुकुल प्रणाली के प्रबल समर्थक, महर्षि दयानन्द जी द्वारा स्थापित आर्यसमाज के विस्तार में निरन्तर रत, युवाओं के प्रेरक, चिर युवा, मातृ-पितृभक्त, सेवा को अपने जीवन का आदर्श स्वीकार करके 'इदन्न मम' की भावना को अपने जीवन का आधार बनाने वाले, हम सबके प्रिय, महाशय धर्मपाल जी के 93वें जन्मदिवस के अवसर पर विशाल स्वस्ति याग का आयोजन दिल्ली के एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल में दिनांक 26 मार्च, 2016 को सम्पन्न हुआ।

विद्यालय के प्रांगण में महाशय जी का आगमन लगभग 10 बजे हुआ। भारी संख्या में उपस्थित बच्चों ने उनका पुष्पों से स्वागत किया तथा रंग-बिरंगी वेशभूषा में अनेक प्रान्तों के विद्यालयों के बच्चों ने उनका तिलक लगाकर अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् महाशय जी विशाल जनसमुदाय के बीच होकर उपस्थित संन्यासी महानुभावों का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए यज्ञ वेदी पर पहुंचे।

पूरा पण्डाल वेद मन्त्रों से गुंजायमान हो रहा था। यज्ञ से पूर्व उनके सुपुत्र श्री राजीव जी एवं पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी जी ने यज्ञ ब्रह्मा आचार्य डॉ. वागीश जी का स्वागत कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया साथ ही विभिन्न गुरुकुलों के ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियों का पीतवस्त्र द्वारा स्वागत किया। वेद मन्त्रों की ध्वनि के बीच विराट स्वस्ति याग सम्पन्न हुआ। तदुपरान्त संगीतमय बधाई गीत के साथ उपस्थित समस्त जन समुदाय ने मन्त्रपाठ एवं पुष्पवर्षा द्वारा पूरे परिवार को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दीं। बधाई गीत और पुष्पवर्षा के समय महाशय जी इतने भावविह्वल हो उठे कि उनके चेहरे से खुशी की अश्रुधारा बहने लगी तथा उन्होंने जन समुदाय की भावना को हाथ जोड़कर स्वीकार किया। तदुपरान्त मंच से बच्चों द्वारा ईश्वर भक्ति एवं देशभक्ति के बहुत सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मंच इतना भव्य था कि उसकी सुन्दरता देखते ही बनती थी। बीच-बीच में संन्यासी महानुभावों ने अपना आशीर्वाद महाशय जी के प्रति व्यक्त किया।

सभी वक्ताओं ने उन्हें प्रकाशपुंज बताते हुए सभी लोगों से उनके जीवन से आज के दिन कुछ ग्रहण करने की प्रेरणा दी। वरिष्ठ संन्यासी एवं सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा कि महाशय जी का जीवन प्रत्येक आयु के व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत है। 93 वर्ष की अवस्था में उनके अन्दर जीने की इच्छा, जीकर कुछ करने की इच्छा और निरन्तर कुछ करते रहने की इच्छा से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। आर्यसमाज के विस्तार के लिए दिए गए उनके योगदान से हम भी कुछ सीखें। मैं तो उनसे हमेशा प्रेरणा लेता रहता हूं। उन्हीं से मैंने निराश क्षणों में भी उत्साहपूर्वक कार्य करते रहने की सीख पाई है।

पंजाब केसरी परिवार की श्रीमती किरण चोपड़ा जी ने कहा कि वे सदैव मेरे मार्गदर्शक तथा दादा पिता तुल्य प्रमुख सहयोगी रहे। महाशय जी ने हजारों परिवार के लिए परोपकारी व नेक कार्य किये जिससे हमें भी लगातार प्रेरणा मिलती रहती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करके समाज से बहुत सारी कुरीतियां मिटाई, महाशय धर्मपाल ने उसी परम्परा को आगे बढ़ाया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि महाशय जी की दानशीलता की प्रवृत्ति ने हमारे अन्दर भी वे भाव जागृत करने का कार्य किया है। हमें उनसे निरन्तर प्रेरणा मिलती रहती है। उनका आशीर्वाद आर्यसमाज की संस्थाओं पर जिस प्रकार से बना हुआ है निश्चित रूप से अभी बड़े-बड़े कार्य उनके मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद से पूर्ण होंगे। आर्यसमाज के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र की बागडोर जब महाशय धर्मपाल जी ने सम्भाली तभी वह कार्य आगे की ओर बढ़ सका और अब आर्यसमाज के कार्यों को विस्तार करने की इच्छा का ही परिणाम है कि आर्यसमाज से अछूते क्षेत्रों अंडमान-निकोबार, गोवा, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों में भी अब आर्यसमाज के प्रकल्प बनाने की योजना पर कार्य आरम्भ हुआ है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ने कहा कि देश-विदेश में आर्यसमाज के जो कार्य आगे बढ़ रहे हैं उनमें महाशय जी के आशीर्वाद का बहुत बड़ा प्रभाव रहा है। उनका इस आयु में

- शेष पृष्ठ 7 पर

महाशय धर्मपाल जी हमारे लिए प्रेरणा हैं – श्रीमती किरण चोपड़ा

हाशय जी का 93वां जन्मदिवस मनाया जा रहा है। वह मेरे लिए, हमारे पूरे आर्य समाजी परिवारों के लिए एक शक्तिदायक प्रेरणा हैं। वह उन लोगों के लिए भी प्रेरणा हैं जो जीरों से हीरो बनते हैं। वह अपने आप में एक मिसाल हैं। आर्य समाज के प्रति उनका बहुत बड़ा योगदान है। वह एक ऐसे शख्स हैं जो भारत की राजधानी दिल्ली में कुतुब रोड तांगा स्टैंड पर एक तांगा लेकर दो आने में सवारियों को टेशन-टेशन (स्टेशन) पुकार कर सवारियां लेते थे। वक्त बदला, कड़ी मेहनत, लगन के साथ आगे चलकर महाशय धर्मपाल जी का नाम देश की नामचीन हस्तियों में शामिल हुआ।

वह हमारे लिए बहुत लकी भी हैं। वरिष्ठ नागरिक केसरी कल्ब का उद्घाटन भी उन्हीं के हाथों हुआ जिसे लोग महज एक मजाक समझते थे। उनके आशीर्वाद से यह एक सफल प्रयास साबित हुआ। उन्होंने हमेशा मेरे सिर पर एक दादा की तरह, पिता की तरह हाथ रखा। शुरू-शुरू में तो मुझे हर रोज एक पत्र लिखते थे और उत्साहित करते थे कि बेटी बहुत अच्छा काम कर रही है और कभी-कभी फोन करके चैलेंज भी करते थे कि "बुढ़यां तों थक ता नहीं गई, एक बूढ़ा सम्भालना मुश्किल तू ऐने बुड्ढे किदां सम्भालेंगी।" उनकी ये बातें मैं चैलेंज की तरह लिया करती थी। शायद यह उनका मुझे आगे बढ़ाने का तरीका था। उन्हें किसी भी समारोह में याद करती हूं तो वे आते हैं। बुजुर्गों के साथ नाचते-गाते हैं, आशीर्वाद देते हैं। यहां तक कि हमने ललित होटल में दुनिया में पहली बार बुजुर्गों का फैशन शो किया। उसमें उन्होंने शहंशाह के गाने पर शो स्टोपर की भूमिका कर हजारों बुजुर्गों को उत्साहित किया।

यही नहीं मुझे आज भी याद है जब मेरी पहली पुस्तक 'आशीर्वाद' को विज्ञान भवन में भैरों सिंह शेखावतजी ने लांच किया तो वे महाशय जी को देखकर हैरान हुए और उन्होंने मंच पर कहा-महाशय जी, मुझे लगता था कि आप फोटो पर हार वाले हो, पर अपने सामने आपको देखकर मैं बहुत खुश हुआ हूं। वाकई महाशय जी अभी तक अपने मसालों के विज्ञापन के हीरो हैं। उन्हें किसी एक्टर या मॉडल की जरूरत नहीं। वह अपने आप में खुद मॉडल हैं, परंतु अब सबके हीरो हैं। अपनी उम्र को जीना तो कोई उनसे सीखे। वह अपनी उम्र को मात देते हैं। इसके पीछे उनकी सादगी और मेहनत छिपी है तथा आज 93 वर्ष की उम्र में भी वह मेहनत करने से पीछे नहीं रहते। वह एक वरिष्ठ आर्य नेता हैं और कर्मठ समाजसेवी होने के साथ-साथ एक नेक इंसान भी हैं। एक कर्मयोगी ही नहीं बल्कि समाज में सेवा को अपना आदर्श मानते हैं। दर्जनों संस्थाओं के वह अग्रणी हैं और समाज में कमजोर वर्ग को वह अपने साथ जोड़कर हमेशा मदद को तैयार रहते हैं। उनके आदर्श हैं महर्षि दयानन्द जी। उनके अमर शहीद लाला जगत नारायण जी (दादा ससुर), अमर शहीद रमेश चन्द्र जी घनिष्ठ पारिवारिक संबंध रहे हैं। वही एक ऐसे व्यक्ति हैं कि जब अश्विनी जी के पिताजी की शहीदी के बाद उनके अपने सगों ने सब कुछ इमोशनल ब्लैकमेल करके छीन लिया था तो उन्होंने उनके सगों को कटु शब्दों का पत्र लिखा था कि यह तूने इन बच्चों को अमर शहीद की पत्नी के साथ गलत किया। यह हिम्मत भी किसी-किसी में होती है। अक्सर लोग जीवित और पैसे वालों की तरफ होते हैं, परन्तु महाशय जी हमेशा सच्चाई का साथ देते हैं और सबको सच्चाई का आइना भी दिखाते हैं आज जब सब लोग उनके जन्मदिन की खुशियां मना रहे हैं परन्तु मेरा अन्दर से दिल घटता है कि उनकी उम्र का एक साल कम हो रहा है। जब उन्हें थोड़ा सा कमजोर होते देखती हूं तो भी दिल घबराता है क्योंकि दिल वे वो आशीर्वाद, स्नेह, हौसला देते हैं, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, ऐसे शायद बहुत कम लोग होते हैं। मैं घबरा कर उनसे कहती हूं-महाशय जी, आपने मेरे लिए 150 साल जीना है तो वह हंस कर कहते हैं-तुम्हें किसने कहा मैंने मरना है। मैं तां बाबा कदी वही नहीं मरना, फिर मुस्कराते हैं। मेरी आंखें खुशी से नम हो जाती हैं। वाकई महाशय जी आप हम सबके लिए एक प्रेरणा हो, एक बड़ा आशीर्वाद हो, आपको सारे आर्य समाजी परिवार, पंजाब केसरी परिवार, वरिष्ठ नागरिक परिवार बहुत प्यार, सम्मान करता है। अंत में यही कहूंगी, "जीवेम शरद: शतम्-भूयश्च शरद: शतात्।"

वैदिक परम्परा के अनुसार हम कामना करते हैं कि महाशय जी सौ वर्ष से भी अधिक स्वस्थ जीवन प्राप्त करें एवं हम सबको उनका आशीष हमेशा प्राप्त होता रहे।

- अध्यक्षा, पंजाब केसरी वरिष्ठ नागरिक क्लब

महाशय जी की दिनचर्या है अच्छी सेहत और लंबी उम्र का रहस्य - आओ जानें!

जीवन के 92 बसंत देखने के बावजूद आज भी महाशय धर्मपाल पूरी तरह स्वस्थ व चुस्त-दुरुस्त हैं और सफेद बालों के अलावा उनके व्यक्तित्व में कोई भी ऐसा निशान नजर नहीं आता, जिसे बुढ़ापा का लक्षण कहा जा सके। न तो उन्हें किसी प्रकार की गंभीर स्वास्थ्य समस्या है, न ही बुढ़ापे की थकान उन्हें परेशान करती है, एक कर्मठ नौजवान की भांति वे अपने सभी दायित्वों को भलीभांति पूरा करते हैं। महाशय धर्मपाल की इस सेहत और लम्बी उम्र का रहस्य उनकी आदर्श जीवन शैली, जीवन जीने के बेहतर तौर-तरीके में छुपा हुआ है।

बचपन से ही महाशय धर्मपाल अपनी सेहत को लेकर विशेष रूप से सावधान रहे हैं। कसरत, मालिश आदि का शौक उन्हें बचपन से रहा और खान-पान को लेकर भी अपने मन को उन्होंने कंट्रोल में रखा। तले-भुने, मिर्च-मसालेदार खाद्य पदार्थों की बजाय दूध, घी, मलाई, दही, छाछ, फल आदि ही उनके प्रिय भोज्य पदार्थ हैं। इसके साथ ही कड़ी मेहनत को भी वे सेहत के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण मानते हैं।

आज 92 वर्ष की उम्र होने के बावजूद अपनी दिनचर्या को लेकर महाशय धर्मपाल पूरी तरह सजग रहते हैं। कोई भी मौसम हो, सुबह 4.45 बजे वे हर हाल में बिस्तर छोड़ देते हैं, यह उनका दशकों पुराना नियम है। इसके बाद हाथ-मुंह धोकर रात में तांबे के बरतन में रखा हुआ 1 गिलास पानी पीते हैं। सर्दी के मौसम में वे इस पानी में थोड़ा गरम पानी भी मिला लेते हैं। पानी पीने के बाद मुंह का जायका ठीक करने के लिए महाशय धर्मपाल थोड़ी मात्रा में शहद लिया करते हैं। इसके बाद वे दांत साफ करने के लिए अपने खास प्रोडक्ट एमडीएच दंत मंजन का इस्तेमाल करते हैं।

सुबह में 5.15 बजे महाशय धर्मपाल पार्क में सैर के लिए घर से निकल जाते हैं और 5.25 बजे पार्क में पहुंचकर सैर, व्यायाम, आसन, प्राणायाम आदि करते हैं। इसके साथ ही ओ३म् ध्वनि का गुंजन, उल्लासित होकर भगवद्नाम के जयकारे लगाना, जमकर ठहाके लगाना आदि भी उनके इस प्रातःकालीन कार्यक्रम में शामिल है।

पार्क से घर पहुंचकर महाशय धर्मपाल 1 गिलास गाय के दूध में चीनी और चने का सत्तू डालकर पीते हैं। इसके बाद बादाम रोगन से या फिर बादाम रोगन न हो, तो सर्दी के मौसम में तिल के तेल से और गरमी के मौसम में सरसों के तेल से शरीर की मालिश करवाते हैं। इसके बाद वे स्नान करते हैं। स्नान के लिए सर्दी के मौसम में गुनगुने पानी और गरमी के मौसम में ठंडे पानी का इस्तेमाल करते हैं। वे साबुन का इस्तेमाल कम-से-कम करते हैं। स्नान के बाद तैयार होकर वे प्रतिदिन 8.15 बजे हवन करते हैं, जिसमें कुल 25 मिनट लगते हैं। इसके बाद नाश्ते में पपीता, चीकू, अंगूर आदि फलों के साथ बादाम की शरदाई लेते हैं। इसके अलावा इच्छा होने पर कभी-कभी बिस्कुट, बेसन की रोटी आदि भी ले लिया करते हैं।

नाश्ता करने के बाद महाशय धर्मपाल दोपहर के लिए घर की बनी 2 सब्जियां, दाल और गाय का दूध लेकर फैक्ट्री के लिए निकल जाते हैं। फैक्ट्री पहुंचकर वे सबसे पहले हवन करते हैं, इसके बाद तन्मय होकर अपने काम में जुट जाते हैं। दोपहर में गरम-गरम 2 चपातियों के साथ वे घर से लायी सब्जियां और दाल लंच के रूप में लेते हैं, फिर थोड़ी मात्रा में फल ले लेते हैं। शाम में 5 बजे दूध में हल्की चायपत्ती डालकर पीते हैं।

दिन में अपनी कीर्ति नगर फैक्ट्री के दफ्तर में काम करने के साथ-साथ महाशय धर्मपाल आवश्यकतानुसार अन्य फैक्ट्रियां में भी पहुंचते हैं तथा उन्हें एमडीएच की ओर से संचालित अस्पताल व स्कूलों के लिए भी समय निकालना पड़ता है। इसके अलावा लोगों के आग्रह पर विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में भी उन्हें अपनी उपस्थिति दर्ज करानी पड़ती है।

शाम में 7 बजे महाशय धर्मपाल फैक्ट्री से आने के बाद सीधे पार्क में पहुंच जाते है और सैर करते हैं। रात में 8.30 बजे वे भोजन करते हैं। रात के भोजन में सिर्फ 2 चपातियां, दाल और सब्जी होती है। भोजन के बाद वे थोड़ी देर तक सैर करते हैं, फिर सिर पर बादाम रोगन की मालिश करवाते हैं। इसके साथ ही अपने घर-परिवार के सदस्यों और पोतियों के साथ बातचीत के लिए भी यही समय तय है। रात में 10.30 बजे तक वे बिस्तर पर चले जाते हैं।

महाशय धर्मपाल की इस सुव्यवस्थित दिनचर्या और जीवनशैली का ही यह परिणाम है कि आजीवन कोई भी गंभीर बीमारी उनका स्पर्श तक न कर सकी। अपने खान-पान को लेकर तो वे इतने सचेत रहते हैं कि शादी-विवाह में भी घर से खाना खाकर जाते हैं या फिर घर आने के बाद खाना खाते हैं। कुल मिलाकर सही खान-पान, दुर्गुणों से दूरी, सक्रियता, योग-व्यायाम और सैर तथा सबकी भलाई के लिए संघर्ष करना-ये महाशय धर्मपाल की कुछ ऐसी खासियतें हैं, जो उन्हें इस उम्र में भी पूरी तरह स्वस्थ और ऊर्जावान बनाए रखती हैं। आज 93 वर्ष की अवस्था में भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आया है। आओ हम भी महाशय धर्मपाल जी से प्रेरणा लेवें।

समाजोत्थान में महाशय धर्मपाल का उल्लेखनीय योगदान

महाशय धर्मपाल ने समाज सेवा के क्षेत्र में जो महत्त्वपूर्ण योगदान किया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम होगी। उनके मार्गदर्शन में एमडीएच परिवार के माध्यम से संचालित किए जाने वाले कुछ प्रमुख संस्थान इस प्रकार हैं:-

- महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट, जनकपुरी, नई दिल्ली।
- महाशय धर्मपाल धर्मार्थ ट्रस्ट, कीर्ति नगर, नई दिल्ली।
- माता चन्नन देवी अस्पताल, जनकपुरी, नई दिल्ली।
- एमडीएच इंटरनेशनल स्कूल, जनकपुरी एवं द्वारका, नई दिल्ली।
- महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, सुभाष नगर, नई दिल्ली।
- महाशय चुन्नीलाल सरस्वती बाल मंदिर, हरी नगर, दिल्ली।
- माता लीलावंती सरस्वती शिशु मंदिर, टैगोर गार्डन, दिल्ली।
- माता लीलावंती सरस्वती विद्या मंदिर, हरी नगर, दिल्ली।
- महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, बेटकी (कर्नाटक) एवं ढांसा (दिल्ली)
- स्व. श्री संजीव गुलाटी चिकित्सालय एवं शोध केंद्र, ऋषिकेश, उत्तरांचल।
- माता लीलावंती श्रीकृष्ण वैदिक कन्या विद्यालय, खुशीपुर, मथुरा।
- माता लीलावंती वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण केंद्र, उदयपुर, राजस्थान।
- महाशय धर्मपाल एमडीएच वानप्रस्थाश्रम, परली, महाराष्ट्र।
- महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानंद आर्य विद्या निकेतन, धनश्री (आसाम)
- महाशय धर्मपाल एमडीएच दयानंद आर्य विद्या निकेतन, बामनिया (म.प्र.)
- एमडीएच गौशाला, अजमेर(राज.), * एमडीएच गौशाला, गांधीधाम (गुज.)
- एमडीएच परिसर निर्वाण न्यास, अजमेर, राजस्थान।
- महाशय धर्मपाल कन्या छात्रावास, गुरुकुल, चोटीपुरा, यू.पी.।
- महाशय धर्मपाल प.स्कूल, महाशय संजीव प. स्कूल, उत्तरकाशी, उत्तराखंड।
- महाशय धर्मपाल एमडीएच आरोग्य मंदिर, फरीदाबाद, हरियाणा।
- महाशय संजीव बाल विद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा।
- महाशय धर्मपाल एमडीएच वेद रिसर्च फाउंडेशन, कालीकट, केरल।
- महाशय धर्मपाल हार्ट इंस्टीट्यूट।
- एमडीएच शुभ संजोग सेवा।
- एमडीएच पार्क, नागौर।
- महाशय धर्मपाल एमडीएच विद्यालय विंग, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार
- माता चन्नन देवी आर्य कन्या गुरुकुल, पिल्लूखेड़ा
- महाशय धर्मपाल विद्यार्थी स्थायी निधि, गुरुकुल, कुरुक्षेत्र।
- महाशय धर्मपाल विद्यार्थी स्थायी निधि, गुरुकुल, झज्जर
- महाशय धर्मपाल प्रचार निधि - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
- महाशय धर्मपाल प्रचार निधि - आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

यह शृंखला अनवरत जारी है, ...कोई न कोई कार्य... कोई न कोई प्रकल्प आर्यसमाज के उत्थान एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं को प्रसारित करने के लिए स्थापित एवं संचालित करने के लिए निरन्तर प्रयास में रहते हैं महाशय जी।

महाशय धर्मपाल जी की यज्ञीय भावना

महाशय धर्मपाल जी अपने जीवन में यज्ञ को अत्यधिक महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं मैं आज जो भी हूं वह आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द एवं यज्ञ रूपी देव की ही कृपा है। * महाशय जी प्रतिदिन प्रतिदिनि प्रातः 8 बजे अपने घर दैनिक यज्ञ करते हैं।

* महाशय जी की प्रत्येक फैक्टरी में प्रातः 9 बजे यज्ञ के साथ कार्य आरम्भ होता है और सायंकाल सभी यज्ञ कर्मचारियों के साथ पुनः यज्ञ कार्य करके दिन सम्प-न्न किया जाता है।

* एम.डी.एच. के संस्थानों में महाशय जी समय-समय पर विभिन्न विद्वानों को आमन्त्रित करके यज्ञ एवं प्रवचन करवाकर महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्यों एवं वैदिक धर्म की शिक्षाओं का प्रचार करते हैं।

महाशय धर्मपाल जी के 93वें जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य की ओर से ताबें का हवन कुण्ड भेंट करते हुए आर्यजन।

जन्मदिवस 19 अप्रैल पर विशेष

प्रेरक जीवन के धनी – महात्मा हंसराज जी

महात्मा हंसराजजी सभा संगठन की कलम से व्यक्तिगत पत्र तक नहीं लिखते थे। जो सारा जीवन किराये के मकान में व्यतीत करते रहे हों, जो फकीरी में फटे पेंबन्द लगे कम्बल को ओढ़कर ही सन्तुष्ट बने रहे हों और नये भेंट में आये हुए कम्बलों को छात्रावास में विद्यार्थियों को भिजवा दें ऐसे उच्चादर्श एवं प्रेरक जीवन के धनी व्यक्ति सभा, संगठनों, संस्थाओं में कहां हैं। यदि महात्मा हंसराज जी के जीवन से शिक्षा, प्रेरणा, सन्देश एवं सीख लेना चाहें तो बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। जीवन एवं जगत को दिशा दे सकते हैं।

– डॉ. महेश विद्यालंकार

देवात्मा ऋषि दयानन्द के असामयिक निधन के पश्चात् आर्य समाज लाहौर में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। ऋषि की स्मृति को अजर-अमर बनाए रखने के लिए तथा 'अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए' की भावना से प्रेरित होकर डी.ए.वी. संस्था का सूत्रपात किया गया। सच है कि डी.ए.वी. संस्था ऋषिवर को स्मरणांजलि एवं श्रद्धांजलि है। डी.-की नींव पर डी.ए.वी. बना तथा खड़ा है। डी. (दयानन्द) और उनके विचारों, आदर्शों एवं सिद्धान्तों को हमें कभी भूलना नहीं चाहिए। इस कार्य को सुन्दर, व्यवस्थित तथा सुचारु रूप से चलाने के लिए सबल कन्धा देने वालों में स्वनाम धन्य महात्मा हंसराज का नाम बड़े श्रद्धा सम्मान एवं आदर से लिया जाता है। यहीं से हंसराज जी के जीवन की कहानी आरम्भ होती है। हृदय में सुप्त तप-त्याग, सेवा, मिशनरी भाव आदि जाग गए। ऋषि की विचारधारा एवं शिक्षादर्शन को प्रचारित और प्रसारित करने के लिए जीवन दान का संकल्प ले लिया। घर-परिवार, सम्बन्धी एवं परिचित जन उनसे अच्छी नौकरी करके धन-सम्पत्ति व सुखभोग-साधनों की अपेक्षा कर रहे थे। उन्होंने जीवन की धारा को मोड़ लिया। ऐसे तप, त्याग, सेवा परोपकार धर्मार्थ आदि के भाव विरले महापुरुषों के अन्दर ही जगते हैं।

महात्मा हंसराज जी स्कूल के प्रथम अवैतनिक मुख्याध्यापक बने उनकी लगन व देख-रेख में स्कूल बड़ी तेजी से अपनी साख, पहिचान तथा सम्मान बनाता हुआ उन्नति के शिखर पर पहुंच गया। कुछ समय के बाद कॉलेज की स्थापना की गई। हंसराज जी उसके प्रधानाचार्य नियुक्त हुए। अपनी लगन, परिश्रम, ईमानदारी, सादगी, सरलता, मितव्ययिता और ऋषि-भक्ति से उन्होंने कॉलेज को विशाल वट-वृक्ष के रूप में परिवर्तित कर दिया। इस उन्नति-प्रगति के पीछे उनका तप-त्याग, सेवा साधना तथा आत्म समर्पण था। ऐसी भाव-भावना प्रेरणा, सेवाभाव आदि लोगों में दुर्लभ होते जा रहे हैं। यह उनके जीवन का प्रेरक पक्ष हम सबको बहुत कुछ सीखने, समझने व करने की प्रेरणा देता है। महापुरुषों के जीवन प्रकाश स्तम्भ होते हैं जो हमें रोशनी देते और सन्मार्ग दिखाते हैं।

महात्मा हंसराज जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व प्रेरक व चुम्बकीय था। ''सादा जीवन उच्च विचार'' की वे जीवन्त मूर्ति थे। उनका जीवन, आचरण व व्यवहार बोलता था। जो भी उनके सम्पर्क में आया, वह प्रभावित होता था। दुबले-पतले, खद्दर पहनने वाले, सिर पर पगड़ी बांधने वाले, तप त्याग सेवाव्रती, बिना कपड़े रंगे महात्मा कहलाये। उन्होंने इस पद की गरिमा व सम्मान को जीवन भर निभाया। उन्होंने अपना जीवन और परिवार बड़ी सादगीपूर्वक व कम से कम खर्च में चलाया। बड़े भाई द्वारा मासिक चालीस रुपयों की सहायता से पारिवारिक जीवन-यात्रा सन्तोष से चलाते रहे।

आज हमारे जीवनों व रहन-सहन से सादगी, सरलता, सहजता तथा मितव्ययिता छूट रही है। महात्मा हंसराज जी सभा संगठन की कलम से व्यक्तिगत पत्र तक नहीं लिखते थे। जो सारा जीवन किराये के मकान में व्यतीत करते रहे हों, जो फकीरी में फटे पेंबन्द लगे कम्बल को ओढ़कर ही सन्तुष्ट बने रहे हों और नये भेंट में आये हुए कम्बलों को छात्रावास में विद्यार्थियों को भिजवा दें। ऐसे उच्चादर्श एवं प्रेरक जीवन के धनी व्यक्ति सभा, संगठनों, संस्थाओं में कहा हैं। यदि महात्मा हंसराज जी के जीवन से शिक्षा, प्रेरणा, सन्देश एवं सीख लेना चाहें तो बहुत कुछ सीख ले सकते हैं। जीवन एवं जगत को दिशा दे सकते हैं।

महात्मा हंसराज जी कॉलेज के प्रधानाचार्य पद को, प्रादेशिक सभा के प्रधान पद को और होस्टल के वार्डन पद को सम्भालते हुए विद्यार्थियों को धर्मशिक्षा, संध्या, यज्ञ, वेदपाठ आदि स्वयं पढ़ाते थे। विद्यार्थियों के धार्मिक व नैतिक जीवन का पूरा ध्यान रखते थे। उनका जीवन बोलता था। उनके क्रियात्मक जीवन से प्रभावित होकर कई नौजवानों में आजीवन सेवा का भाव जाग उठा। वे जिधर चले, उधर ही जनता और सफलता उमड़ पड़ी। उन्होंने संस्था और सेवा के लिए लाखों रुपये एकत्र किए। जनता ने श्रद्धा-भक्ति से उनकी झोली भर दी। उन्होंने वैदिक धर्म, सेवा, शिक्षा और मानव निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक और स्मरणीय योगदान दिया है। उनकी सफलता के पीछे सादगी, सेवा, त्याग तथा निर्लोभता थी। वे तड़क-भड़क एवं सुख भोग साधनों को सच्ची सुख शान्ति, सन्तोष प्रसन्नता आदि का आधार नहीं मानते थे। उनके जीवन में धार्मिकता, आध्यात्मिकता, प्रभु भक्ति और ऋषि मिशन की भावना थी। वे वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार तथा प्रभाव का सदा ध्यान रखते थे। वे कुशल वक्ता व प्रचारक थे। वे वैदिक जीवन दर्शन एवं धार्मिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनकी सोच व दृष्टि आधुनिकता व प्राचीनता के समन्वय की रही है। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, अंग्रेजी, गणित आदि विषयों के साथ-साथ जीवन-विद्या की पढ़ाई के भी प्रबल पक्षपाती थे। वे अंग्रेजी पढ़ना बुरा नहीं मानते थे। अंग्रेजियत के प्रभाव व रंग-ढंग को अच्छा नहीं मानते थे। मनुष्य के पास डिग्रियां, पद प्रतिष्ठा, पैसा, सुख भोग साधन आदि सब कुछ है मगर इन्सानियत, नैतिकता व जीवन मूल्य, आचार-विचार, मनुष्यत्व आदि नहीं है तो ये सब कुछ व्यर्थ व महत्वहीन है। वर्तमान शिक्षा-पद्धति में यह कमी व दोष आ रहा है। शिक्षा में धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय तथा मानवीय जीवन मूल्यों का तेजी से अभाव हो रहा है। इसी कारण समूचा मानव-समाज अशान्ति संघर्ष, हिंसा और विवादों की ओर बढ़ रहा है।

डी.ए.वी. की शिक्षा पद्धति में यह उल्लेखनीय, प्रेरक, महत्त्वपूर्ण, आकर्षक विशेषता रही है। एंग्लो शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थी को भारतीय संस्कार, जीवनदर्शन, राष्ट्रीय, नैतिक, धार्मिक, वैदिक चिन्तन आदि की विचारधारा को समझा व पढ़ा देना। यह विशेषता समस्त डी.ए.वी. संस्थाओं को सबसे अलग सम्मान व पहिचान दिलाते हैं।

महात्मा हंसराज की इच्छा व प्रयास रहता था कि जो विद्यार्थी हमारी संस्था से निकले, उस पर हमारे विचारों, संस्कारों और संस्था की विशेषताओं की छाप हो। उसकी अलग पहिचान हो, उसके रहन-सहन, बोल-चाल, व्यवहार आदि में भारतीयता आधारित व विशेषता हो। उसके जीवन पर वैदिक विचारधारा का प्रभाव हो। वह सच्चे अर्थ में मानव व श्रेष्ठ नागरिक बने। यही सोच-विचार, प्रयास व उद्देश्य भावना महात्मा हंसराज जी के जीवन में सदा रही। इसीलिए वे वन्दनीय, स्मरणीय, प्रशंसनीय और अनुकरणीय है।

वर्तमान डी.ए.वी. परिवार को महात्मा हंसराज जी का जीवन-दर्शन, तप-त्याग सेवा, सादगी, सरलता आदि बहुत कुछ सिखाता, समझाता व प्रेरित कर रहा है। जो डी.ए.वी. की साख, सम्मान, विश्वसनीयता, पहिचान आदि चली आ रही है, उसको हम सब लोगों ने सम्भालना, रक्षा करना और आगे बढ़ाना है। महात्मा हंसराजजी ने अन्तिम समय में खुशहाल चन्द (जो बाद में आनन्द स्वामी बने) को मन की पीड़ा कही थी- ''डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति में आर्यत्व पूर्ण जीवन वाले आर्य समाजी लोग कम हो रहे हैं, धर्मशिक्षा व वेद प्रचार की भावना घट रही है। आर्य समाज के काम में शिथिलता व बिखराव आ रहा है। इन बातों का ध्यान रखना।'' महात्माजी की अन्तिम पीड़ा व इच्छा पर हम सब डी.ए.वी. परिवार जन गम्भीरता व ईमानदारी से चिन्तन-मनन और क्रियात्मक सोचें तो निश्चय ही उनका जन्मदिन मनाना सार्थक व सफल होगा और उनकी आत्मा को शान्ति व सन्तोष मिलेगा।

वर्षों के अन्तराल के बाद डी.ए.वी. परिवार को मुखिया के रूप में भावनाश्रोत श्री पूनमजी सूरी मिले हैं। जिनके पास वैदिक विचारधारा की लम्बी, विरासत, वसीयत और परम्परा है। उनकी प्रबल इच्छा, प्रयास व प्रयत्न है कि डी.ए.वी. की लम्बी प्रेरक गौरवशाली परम्परा पुनः विश्वपटल पर अपनी सम्मानित पहचान बनाए। दयानन्द एंग्लो वैदिक विचारधारा का सर्वत्र समन्वित प्रचार एवं प्रसार हो। डी.ए.वी. के अधिकारियों, कर्मचारियों, प्राध्यापकों व विद्यार्थियों सभी के आचार-विचार, जीवन, व्यवहार और कर्मों में सुन्दरता व श्रेष्ठता आए। यदि हंसराज दिवस पर यदि हमारे मन, विचार व हृदय में सेवा, त्याग, संयम, परोपकार,सादगी आत्मबोध आदि के भाव जग जाय, कुछ उनके जीवन की छाया व छाप हमारे जीवन में पड़ जाए और कुछ संकल्प-व्रत ले सकें तो जन्म दिन सार्थक बन जायेगा। महापुरुषों के जन्म दिवस, बलिदान दिवस, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने व प्रेरणा देने आते हैं। सोचो, समझो और कुछ करो। केवल जलसे जुलूस, लंगर, मेले आदि तक इन कार्यक्रमों को सीमित न करो। केवल ऊपर की बातों से बात न बनेगी। महापुरुषों की मूलात्मा चिन्तन व सन्देश को समझो और पकड़ो तभी हम सच्चे अर्थ में उनकी जय बोलने और श्रद्धांजलि देने के हकदार होंगे। मैं महात्मा हंसराज जी के पावन जन्मोत्सव के पर्व पर उनके व्यक्तित्व, कृतित्व, योगदान आदि को अनेकशः स्मरण एवं नमन करता हूं।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री रामनवमी
15 अप्रैल पर विशेष

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी

भगवान श्रीराम के जीवनादर्शों, घटनाओं, प्रेरणाओं और उपदेशों आदि को संक्षिप्त विचारों में समेटना, मेरे जैसे सामान्य बुद्धि वाले के लिए असम्भव है। कुछ प्रेरक बिन्दुओं को सोच-विचार के लिए प्रस्तुत किया है जिससे वर्तमान जीवन और जगत् को कुछ शिक्षा, भावना तथा सन्देश मिल सके। तभी भगवान श्रीराम का जन्मोत्व मनाने की सार्थकता सफल होगी। प्रभु हम सबको सद्‌बुद्धि प्रदान करें कि हम सब श्रीराम के सच्चे अनुयायी बनकर मानव-जीवन को सफल बना सकें।

भारत भूमि देवभूमि कहलाती है। इस भूमि को महापुरुषों, महानग्रन्थों तथा उदात्त जीवन-मूल्यों की लम्बी परम्परा प्राप्त रही है। ऐसे महापुरुष और श्रेष्ठ धर्मग्रन्थ अन्यत्र दुर्लभ हैं। इस देश में अनेक तपस्वी, त्यागी और बलिदानी ऋषि-मुनि, सन्त और महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर करके देश, धर्म, संस्कृति, सभ्यता, जीवनमूल्यों तथा आदर्शों की रक्षा की है। इसी परम्परा में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और योगिराज श्री कृष्ण का नाम सम्पूर्ण मानव-जाति बड़ी श्रद्धा और भक्ति-भाव से एवं प्रातःस्मरणीय के रूप में लेती है। अधिकांश आस्तिकता, धार्मिकता, भक्ति, पूजा, प्रार्थना आदि इन्हीं दोनों महापुरुषों से चल रही है। लगभग सभी हिन्दू मन्दिरों, कथा-प्रवचनों और तीर्थों आदि को इनसे अलग करके देखा जाये तो उनका कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। श्रीराम और श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व ने देश-विदेश, इतिहास, संस्कृति, साहित्य, भक्तिभावना सभी को प्रभावित और आकर्षित किया है। यही कारण है कि इतना समय व्यतीत हो जाने पर भी दूर-दूर तक स्थित गांवों में अनपढ़ व्यक्ति को भी इन दोनों महापुरुषों की जन्मतिथियां मौखिक रूप से याद हैं। बिना सूचना और विज्ञापन के सारा देश इनके जन्म-दिवसों को बड़ी धूमधाम से मनाता है। पहले के अधिकांश हिन्दू-नामों के आगे या पीछे राम या कृष्ण का नाम जुड़ा मिलता है। जैसे राम कुमार, राम लाल, कृष्ण लाल, राम कृष्ण आदि।

भगवान श्रीराम का नाम और उनका जीवन भारत तथा भारतीयता की पहचान माने जाते हैं। राम नाम की महिमा और पहचान अपार है। शिक्षित और अशिक्षित सभी उठते-बैठते, सोते-जागते तथा परस्पर मिलते हुए राम का नाम लेकर ही धार्मिक आस्था व भावना प्रकट करते हैं। जनमानस में श्रीराम का नाम इतना व्यापक तथा उच्चभाव को प्राप्त कर चुका है कि शव को श्मशान भूमि ले जाते समय भी राम के नाम का ही उच्चारण किया जाता है। श्रीराम का नाम भक्ति-भावना का दूसरा नाम है। उनका नाम भारत की आस्तिकता का केन्द्र-बिन्दु है। सब कुछ धर्मानुष्ठान उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के चारों ओर घूम रहा है। उन पर न जाने कितना लिखा-पढ़ा और सुना गया है। कितने ही पूजा-पाठ, कीर्तन, कथा-प्रवचन आदि हुए हैं और हो रहे हैं फिर भी संसार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के सत्य स्वरूप को नहीं जान सका है।

श्रीराम जैसा महामानव आज तक धरती पर नहीं आया। उनमें महापुरुषों और देवताओं जैसे गुण थे। वे गुणों की खान और धर्मपुरुष थे। धर्म के समस्त दस लक्षण तथा विशेषताएं उनके व्यवहार में पाई जाती हैं। उदाहरण के लिए धैर्य को ही लीजिए। जितना धैर्य श्रीराम ने राजगद्दी से लेकर लंका-विजय तक दिखाया उतना धैर्य कोई भी धारण नहीं कर सकता। वे मर्यादाओं के पालक, रक्षक और संचालक थे। इन्ही गुणों के करण मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाये। श्रीराम ने जीवन मूल्यों, आदर्शों एवं मर्यादाओं को कहीं खण्डित नहीं होने दिया। पग-पग पर भारतीय नैतिक, पारिवारिक तथा सामाजिक उच्चादर्शों का पालन और रक्षा की। संसार के इतिहास में रामायण जैसे जीवन-जगत् को बदलने वाले प्रेरक आदर्श और उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं मिलते हैं। यह रामायण का ही आदर्श है कि जहां भाई-भाई को मुकुट पहनाता है, जहां खड़ाऊं चौदह वर्ष तक राज्य करती हैं, जहां दो भाई राज्य-सिंहासन को फुटबाल की तरह अपने से दूर फेंकते हैं और कहते हैं 'यह मुझे नहीं चाहिए, इन पर मेरा नहीं, तुम्हारा अधिकार है। एक नहीं, ऐसे अनेक उदाहरण हमें रामायण सिखा, सुना और पढ़ा रही है। रामायण में वही है, जो हमारे जीवन और जगत् में होना चाहिए। इसीलिए हम रामायाण को पढ़ते, सुनते तथा बोलते हैं और दिन-रात पाठ करते हैं। रामायण को पढ़ना और सुनना धार्मिक होने की पहचान है। दिन-रात रामायण का पाठ, कथा प्रवचन आदि सुनने के बाद भी हमारा मन नहीं भरता है, हम ऊबते नहीं हैं और सुनने की अनिच्छा प्रकट नहीं करते हैं। रामयण सीरियल इसका प्रत्यक्ष प्रमाण रहा है। आज भी रामलीला को देखने के लिए लाखों की संख्या उमड़ती है। इसलिए उमड़ती है कि हमारे जीवन और जगत के आदर्श श्रीराम तथा रामायण में हैं। श्रीराम और रामायण ही हमें सच्ची सुख-शान्ति, प्रसन्नता आदि दे सकते हैं। यदि राजा-प्रजा, पिता-पुत्र, भाई-भाई, पति-पत्नी आदि के आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करने हों तो रामायण के पास ही जाना होगा और कहीं ऐसे आदर्श न मिलेंगे। आज भी श्रेष्ठ राज्य की उपमा राम राज्य से दी जाती है। भाई-भाई के प्यार का उदाहरण श्रीराम, लक्ष्मण और भरत से दिया जाता है। आदर्श पति-पत्नी की उपमा श्रीराम तथा सीता से दी जाती है। संसार के इतिहास में ऐसे चरित्र पुरुष कहीं न मिलेंगे।

रामायण भारतीय जीवन पद्धति का आदर्श धर्मग्रन्थ है। यदि भारत का सच्चा जीवन-दर्शन किसी को दिखाना और बताना हो तो रामायण का आदर्श सामने रखना होगा।

श्रीराम दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव वाले महापुरुष थे। ऋषि बाल्मीकि ने मूल रामायण में उन्हें पुरुषोत्तम महापुरुष के रूप में दर्शाया है। तुलसीदास ने रामचरित मानस में श्रीराम को भगवान के रूप में प्रस्तुत किया है। बाल्मीकि की दृष्टि में श्रीराम देव पुरुष थे। तुलसीदास की दृष्टि भक्त की थी। भक्त की दृष्टि आराधक की होती है। सत्य यह है कि ऐतिहासिक, धार्मिक, व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक आदि तथ्यों एवं दृष्टि से श्रीराम महापुरुष ही थे। वे सर्वव्यापक परमेश्वर नहीं थे। श्रीराम ने अपने को कहीं भी परमेश्वर नहीं कहा है। अनेक दैवी गुणों, विशेषताओं एवं आदर्शों के कारण उन्हें ''भगवान'' की उपाधि से अलंकृत किया गया है। आज भी थोड़े से गुणों, विशेषताओं तथा तप-त्याग के कारण साधारण व्यक्ति भी भगवान कहलाने लगते है।। आजकल तो अनेकों भगवान बने घूम रहे हैं। आज भगवानों की इस देश में भीड़ लगी है। श्रीराम तो तन, मन, वचन, कर्म, जीवन-व्यवहार आदि सभी दृष्टियों में दिव्य पुरुष थे। वास्तव में वे महापुरुष थे। उनमें महापुरुषोचित गुण व विशेषताएं थीं।

यदि संसार के लोग श्रीराम को महापुरुष मानकर, उनके जीवन-चरित्र से सीखना चाहें तो बहुत कुछ सीख सकते हैं, सुधरना चाहें तो सुधर सकते हैं और बुराईयों से छूटना चाहें तो छूट सकते हैं। श्रीराम का जीवन चरित्र हमें कदम-कदम पर संभालता और दिशा देता है। हम छोटी-छोटी बातों मे उलझ जाते हैं। हम पर स्वार्थ, अहंकार तथा लोभ हावी हो जाते हैं। भाई-भाई आपस में झगड़ते हैं और कोर्ट-कचहरी जाते हैं। माता-पिता को अपमानित किया जाता है। मर्यादा को तोड़कर परस्त्री के प्रति बुरी नीयत जागृत की जाती है। यदि सच्चे अर्थ में हम सुधरना चाहें तथा शिक्षा लेना चाहें तो श्रीराम का चरित्र और रामायण हमें बहुत कुछ दे सकते हैं। वे धर्म मार्ग तथा कर्त्तव्य पथ से कभी विचलित नहीं हुए। श्रीराम को राज्याभिषेक की जगह वनवास मिला और पिता की दारुण मृत्यु को सहना पड़ा। वनवासकाल में पत्नी-हरण झेलना पड़ा। वन-पर्वत, नदी-नालों आदि की खाक छाननी पड़ी। शक्तिशाली रावण से भयंकर युद्ध करना पड़ा और भाई लक्ष्मण को मूर्छावस्था में देखना पड़ा। ऐसी विकट परिस्थितियों में से श्रीराम का जीवन निकला। फिर भी वे धर्म तथा कर्त्तव्य के मार्ग से रंचमात्र भी विचलित नहीं हुए। आज हम थोड़ी-सी कठिनाई, दुःख तथा अभाव में वेचैन व परेशान होकर हाय-हाय करने लगते हैं। श्रीराम ने कहीं अपने कष्टों, दुःखों एवं अभावों आदि को नहीं कहा है। असली शिक्षा, सीख व प्रेरणा तो यही है जो लेनी चाहिए। सारी रामायण ऐसी प्रेरक बातों से भरी पड़ी है। श्रीराम ने जो कहा, वह करके दिखाया। यह श्रीराम का आदर्श था कि जो पिता की आज्ञा को शिरोधार्य करके वन में चले गए। आज के संसार में माता-पिता उपेक्षित व तिरस्कृत हो रहे हैं।

आज की भूली-भटकी और आदर्श-विहीन मानव जाति को यदि कोई सच्चा रास्ता दिखा सकता है तो श्रीराम का जीवन चरित्र और रामायण के आदर्श पात्र ही। जिस तेजी से संसार में सब कुछ बदलता जा रहा है उसी तेजी से सभी आदर्श और मर्यादाएं टूट-फूट तथा छूट रही हैं। मनुष्यता के स्थान पर पशुता बढ़ रही है। मनुष्य स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो रहा है। चारों ओर हा-हाकार और आपाधापी मच रही है। निराशा और हताशा के इस वातावरण में श्रीराम और रामायण हमें जीवन-ज्योति दे सकते हैं और हमारे लिए संजीवनी बूटी का काम कर सकते है।। श्रीराम के जीवन की प्रत्येक घटना मानव-समाज को दिशा-बोध करा सकती है। आज जो कलह, संघर्ष, अशान्ति, चिन्ता, तनाव आदि तेजी से बढ़ और फैल रहे हैं, इनका एक मात्र समाधान है कि हम श्रीराम के जीवन-चरित्र को पढ़े, समझें और उनके आदर्शो को आचरण में उतारें। इसी कारण रामायण को बार-बार पढ़ा और सुना जाता है जिससे हमारे जीवन में सुधार हो, हम सच्चे अर्थ में इन्सान बनें, बुराइयों से ऊपर उठें, स्वार्थ को छोड़ें और परमार्थ को पकड़ें।

हम प्रतिवर्ष रामनवमी, विजयदशमी और रामलीला आदि बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। इतनी कथाएं, प्रवचन, तीर्थयात्राएं आदि भी होती हैं किन्तु सुधार तथा निर्माण कहीं नज़र नहीं आता है। इसका कारण है कि हम भगवान को मानते है।, भगवान की नहीं मानते हैं। श्रीराम को मानते और पूजते हैं, मगर श्रीराम की नहीं मानते हैं। मन्दिर को मानते हैं मगर मन्दिर की शिक्षाओं को जीवन में नहीं उतारते हैं। यही मूल में भूल हो रही है। महापुरुषों के जन्मोत्सव, कथाएं,

- शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादकीय

लहराता तिरंगा प्यारा

वंदे मातरम के बाद अब ''भारत माता की जय'' और तिरंगे को भी सांप्रदायिक विभाजन के तराजू में रख दिया गया है औरा इन सारी चीजों को नारे से लेकर ध्वज तक, धारदार हथियार के तौर पर स्थापित किए जाने जैसा हो रहा है। जैसे-जैसे सरकार, अपने काम-काज को सवांरने और आर्थिक ढांचा खड़ा करने में जुटी है वैसे-वैसे सांप्रदायिक विभाजन तथा अल्पसंख्यकवादी ध्रुवीकरण का यह खेल तीव्र होता जा रहा है। (एनआईटी) में हुए हंगामे के बाद सत्ता और विपक्ष वहाँ अन्य राज्यों से गये छात्रों की परेशानी को समझने के बजाय राजनीति करने पर अड़ी है रविवार को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने श्रीनगर हवाई अड्डे पर अनुपम खेर को रोक दिया और उन्हें नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एनआईटी) नहीं जाने दिया गया। अनुपम खेर को एनआईटी छात्रों से मिलना था जहां पिछले कई दिनों से कश्मीरी और गैर-कश्मीरी छात्रों के बीच तनाव है। अनुपम खेर ने मीडिया को बताया कि वह तनाव को हवा देने के लिए एनआईटी नहीं जा रहे हैं बल्कि वहां छात्रों को ढांढ़स बंधाने जा रहे हैं किन्तु इसके बाद भी प्रशासन के सामने उनकी सारी दलीलें बेकार गयी। हो सकता है अनुपम का उन छात्राओं की बात सुनकर मन पसीज गया हो जो (एचआरडी) अधिकारियों के सामने अपनी व्यथा बयान कर रही थी कि ''हम पर अश्लील फब्तियां कसी जाती हैं। कहते हैं, एक का रेप हो जाएगा तो बाकी सभी चुप हो जाएंगी। यहां त्योहार मनाने की इजाजत लेनी पडती है। अपने देश में तिरंगा फहराने की अनुमति नहीं है, अगर विरोध करो तो फेल करने की धमकी दी जाती है। चार साल की डिग्री छः साल में पूरी करने को धमकाया जाता है। कई बार तो जान से मारने की धमकियां तक मिलीं। बस, बहुत हो गया, अब और सहन नहीं होता।''

बुधवार को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) श्रीनगर में हालात का जायजा लेने पहुंचे मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के प्रतिनिधियों के सामने बाहरी राज्यों के छात्र-छात्राओं का दर्द और गुस्सा उबल पड़ा। ये कहानी किसी अन्य देश की नहीं बल्कि अपने अभिन्न अंग कहलाये जाने वाले मुस्लिम बहुल राज्य कश्मीर की है जहाँ हर साल भारत सरकार अरबों रुपया वहाँ के निवासियों की जीवन शैली सुधारने के लिए खर्च करती है। लेकिन भारत सरकार स्वेक्षा से वहां तिरंगा नहीं फहरा सकती।

सालों पहले दूरदर्शन चैनल पर एक गीत आता था "मिले सुर मेरा तुम्हारा तो सुर बने हमारा" जिसमें देश के अलग -अलग हिस्सों की भाषाओं में देश की एकता में पिरोया जाता था। लेकिन आज क्या हो गया देश को, यहाँ के राजनेताओं को और मीडिया को? हमें गर्व है एनआईटी श्रीनगर के उन छात्रों पर जिन्होंने जम्मू कश्मीर पुलिस की बर्बरता पूर्वक कार्यवाही के बाद भी देश का ध्वज नहीं झुकने दिया। विद्यार्थियों ने एक-एक कर अपने साथ हुई प्रताड़ना, लाठीचार्ज व धमकियों के बारे में टीम को बताया हाथों में पट्टी बंधे और फूटे सिर लिए छात्रों ने हालात बताए कि तिरंगा फहराने और देश हित में नारेबाजी करने के बाद उन्हें किस तरह से प्रताड़ित किया जा रहा है और एनआइटी को किसी सुरक्षित जगह स्थानांतरित करने की मांग की।

एनआईटी श्रीनगर में कुल 3000 छात्र हैं, जिनमें से 20 फीसदी छात्र स्थानीय हैं। बाकी 80 फीसदी छात्र देश के तमाम हिस्सों से आते हैं। ये सभी छात्र JEE के माध्यम से चुने जाते हैं, जो पहले। AJEE हुआ करता था। अभी हाल ही में देश के प्रधानमंत्री जी जब सऊदी अरब की यात्रा पर थे तब सैकड़ों भारतीय अप्रवासियों ने 'भारत माता की जय' का उद्घोष किया। इस नारेबाजी में न केवल भारतीय कामगार-मजदूर थे, बल्कि अधिकांश बुर्काधारी मुस्लिम उद्यमी महिलाएं भी थीं। कुछ सिरफिरे मजहबी मानसिकता में लिप्त लोगों से बचना चाहिए जो साम्प्रदायिक उन्माद की आग को हवा दे रहे हैं। भारत के मुसलमानों को देश की एकजुटता के प्रति, सहिष्णुता के प्रति एवं अभिव्यक्ति की आजादी के प्रति बहुत ही समझदारी से काम लेना होगा।

भारत माता की जय बोलने से किसी का मजहब खतरे में नहीं होगा। इस नारे का ईश्वरीय आस्था से कोई लेना-देना नहीं है। यदि कोई मुस्लिम भारत वासी है तो 'भारत माता की जय' का तात्पर्य यह समझना चाहिए कि भारत मेरा मादरे वतन है, इसे मैं सलाम करता हूँ। यदि धर्म को ही ब्रह्म वाक्य यानि सब कुछ मान के चलेंगे तब तो धरती पर सुख चौन से जीना ही हराम हो जायेगा। **-सम्पादकीय**

पृष्ठ 3 का शेष

मानवता की परिभाषा ....

भी निरन्तर नई बातों को सोचना और करना हम सबको कार्य करने की प्रेरणा देता है।

इस अवसर पर आचार्य विजयपाल (प्रधान, हरियाणा सभा), स्वामी सम्पूर्णानंद (करनाल), स्वामी सुधानन्द (उड़ीसा), स्वामी देवव्रत सरस्वती (सार्वदेशिक आर्य वीर दल), साध्वी उत्तमायति (संचालिका, सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल), स्वामी प्रणवानंद सरस्वती (दिल्ली), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी (मन्त्री, उ.प्र. सभा), स्वामी यज्ञमुनि, स्वामी सदानन्द सरस्वती (दयानन्दमठ, दीनानागर), श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (प्रधान, उ.प्र. सभा), आचार्य अंशुदेव (प्रधान, छत्तीसगढ़ सभा), श्री दीनानाथ वर्मा (मन्त्री, छत्तीसगढ़ सभा), मा. रामपाल (मन्त्री, हरियाणा सभा), आचार्य प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली पुरोहित सभा), डॉ. योगानन्द शास्त्री, श्री योगेश मुंजाल, सभा उपप्रधान ओम प्रकाश आर्य व उपप्रधान शिव कुमार मदान एवं कोषाध्यक्ष विद्यामित्र ठुकराल, श्री विवेक शिनॉय (केरल), आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आदि अन्य अनेक विद्वान महानुभावों ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की सुन्दरता में वृद्धि की। इस अवसर पर एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल छात्र-छात्राओं विशेष रूप से तैयार किया गया आधे घंटे का मनमोहक कार्यक्रम 'इदन्न मम्' प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में 300 बच्चों की भागीदारी थी, जिन्होंने महाशय जी के जीवन के विभिन्न आयामों को अपनी नाटिका में पिरोकर दर्शाया गया। इस नाटिका में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा समाजोत्थान से सम्बन्धित महाशय जी के कार्यों को प्रस्तुत किया गया। नाटिका के बीच में बच्चों ने जब महाशय जी के संघर्षपूर्ण क्षणों को तांगे के रूप में प्रस्तुत किया वह दृश्य अपने आप में देखने लायक था। बच्चों की प्रस्तुति का समस्त महानुभावों ने दिल खोलकर करतल ध्वनि से उत्साहवर्धन किया। **महाशय जी ने बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दते हुए कहा कि वे मेहनत करके, ईमानदार रहकर, मीठा बोलकर, वह सब कुछ कर सकते हैं जो वे करना चाहते हैं। परन्तु उसके लिए उन्हें अपने शरीर को स्वस्थ रखना होगा और अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए उन्हें ऐसी दिनचर्या बनानी चाहिए जो उन्हें हमेशा व्यस्त रखे साथ ही व्यायाम को और यज्ञ को अपने जीवन का अहम भाग बताने हुए उन्होंने बच्चों को न केवल व्यायाम करने की प्रेरणा दी अपितु स्वयं मचं पर ही डम्बल चलाकर दिखाए।** उनके द्वारा डम्बल चलाने पर तो पंण्डाल में उपस्थित हर व्यक्ति के चेहरे पर उत्साह देखने योग्य था, विशेषकर बच्चों के।

यज्ञ के पश्चात् महाशय जी के सुपुत्र राजीव गुलाटी जी ने उपस्थित समस्त संन्यासी महानुभाव एवं विद्वत महानुभावों का सम्मान करके आशीर्वाद प्राप्त किया। बधाई और शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपस्थित समस्त आर्यजनों के लिए जलपान एवं भोजन की व्यवस्था की गई थी। मंच संचालन सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य ने किया।

पृष्ठ 6 का शेष

रामलीलाएं आदि सभी धार्मिक कृत्य मनोरंजन व मेले बनते जा रहे हैं। लोग रामलीला इसलिए देखने नहीं जाते कि हमें श्रीराम की तरह अपना जीवन बनाना है, अपना सुधार करना है और हमें रावणवृत्ति की जगह रामवृत्ति को लाना है। दु:ख तो विशेष रूप से इस बात पर होता है कि हम अपने महापुरुषों के आदर्श चरित्रों को विकृत कर रहे हैं। जो श्रीराम का चरित्र दूरदर्शन, सिनेमा, सीरियल, तथा रामलीला में दिखाया जा रहा है, उसमें चमत्कार, अन्धविश्वास, ढ़ोंग, पाखण्ड तथा अवैज्ञानिक सोच व दृष्टि है। इससे उनके महापुरुषत्व का अवमूल्यन हो रहा है।

इस देश में हमने जितना अन्याय अपने महापुरुषों के साथ किया है, उतना और कहीं नहीं हुआ। हमने उन्हें भिखारी, रसिक, भोगी, विलासी आदि बना दिया है। जिन्होंने कभी जीवन में भीख नहीं मांगी थी उनके चित्रों को दिखाकर भीख मांगी जा रही है। अपने महापुरुषों को हम नचा और गवा रहे हैं। इससे बढ़कर अपने पूर्वजों का उपहास और क्याहो सकता हैजो उनका श्रद्धेय, वन्दनीय तथा स्मरणीय रूप था, उसे हमने सर्वथा भुला दिया है।

- डॉ. महेश विद्यालंकार
बी.जे.-29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली-110088

आर्यसमाज बाजार सीताराम का 96वा वार्षिकोत्सव

18 अप्रैल से 24 अप्रैल, 2016

प्रवचन : आचार्य राजू वैज्ञानिक
भजन : आचार्य प्रदीप शास्त्री
महिला सम्मेलन : 23 अप्रैल
आर्य सम्मेलन - 24 अप्रैल

प्रवचन के विषय : मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, तीन अनादि सत्ताएं, योग के आठ अंग, सुखी परिवार जीवन में बाहर, गृहस्थ को सुखी करने क उपाय, वेदों में राष्ट्रवाद

- बाबूराम आर्य, मन्त्री

खेद व्यक्त - आर्य सन्देश अंक 20 दिनांक 21 से 27 मार्च में प्रकाशित लेख 'होली का वास्तविक स्वरूप' (लेखक श्री कृष्ण गोयल ध्यानयोगाचार्य) के अन्तर्गत लिखित पंक्ति ''हमारी आत्मा जो परमात्मा का अंश है,'' से आर्य समाज सहमत नहीं हैं। प्रकाशित किसी भी लेख की जिम्मेदारी लेखक की है। यदि किसी पाठक को कोई आपत्ति है तो लेखक से 307-बी, पॉकेट-2 मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली -91पर सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में वैदिक धर्म प्रचार समिति उज्जैन के सहयोग से

सिंहस्थ कुम्भ मेला 2016 (उज्जैन)

के अवसर पर

वैदिक धर्म प्रचार शिविर एवं चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

21 अप्रैल से 21 मई 2016

स्थान: सिंहस्थ मेला, दत्त अखाड़ा क्षेत्र, हनुमन्त बाग के सामने, बड़नगर मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

शिविर उद्घाटन 21 मई प्रात: 11 बजे

उद्घाटन : महाशय धर्मपाल जी, *अध्यक्ष, एम.डी.एच. मसाले*

अध्यक्षता: श्री सुरेश चन्द्र आर्य, *प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा*

शिविर में सेवा एवं सहयोग देने के लिए संपर्क करें-

- आर्य लक्ष्मी नारायण पाटीदार, संयोजक (09827078880)

बच्चों के विकास के लिए महाशय धर्मपाल जी का विशेष सम्बोधन

मेरे प्यारे बच्चों! जब भी, जहां भी मैं जाता हूं, लोग मुझे प्यार से गले लगा लेते हैं। बहुत अच्छा लगता है। लोगों का भरपूर प्यार पाकर। मगर आज मैं आप सबको एक राज की बात बताना चाहता हूं। किसी भी समारोह या फिर कहीं भी मेरी निगाहें सबसे पहले बच्चों की ही तलाश करती हैं, क्योंकि उन्हें गले लगाकर, उनकी पीठ थपथपाकर, उनका माथा चूमकर मेरा मन गद्गद् हो उठता है। क्या आप इसकी वजह जानना चाहेंगे कि ऐसा क्यों होता है?

वजह मैं आपको बताता हूं। बच्चों की मासूमियत, उनका भोलापन, पलभर में रूठ जाना और थोडी- सी मान-मनौव्वल के बाद तुरंत खिलखिला उठना, मन में किसी भी प्रकार का छल-प्रपंच न होना-यह सब कुछ मुझे इतना भाता है कि उन्हें अपने करीब खींच लेने को बेताब हो उठता हूं। आज जब मैं यहां के लिए निकला, तो उसी अहसास की याद मुझे बेचैन किए हुए थी और यहां आकर ऐसा महसूस हो रहा है मानो मेरा खुद का बचपन मेरे सामने आकर खिलखिला रहा हो।

तो मेरे प्यारे नन्हे-मुन्ने, भोले-भाले दोस्तो! बचपन का यह मस्तमौला मौसम बहुत ही मजेदार होता है। मगर इसके साथ ही बचपन से हमारी आगे की जिंदगी का भी बड़ा गहरा ताल्लुक है। मेरे ख्याल में जिंदगी रूपी इमारत की बुनियाद बचपन ही होता है। अगर बुनियाद बिगड़ गयी तो जिंदगी तबाह हो जाती है और अगर बुनियाद संवर जाए, मजबूत बन जाए, तो जिंदगी आबाद हो जाती है। इसलिए जिंदगी को संवारने की जो तपस्या होनी चाहिए, उसकी शुरुआत आपको इस छोटी उम्र में ही करनी होगी।

मगर तपस्या से मेरा मतलब आपको कुछ ऐसा करने के लिए बढ़ावा देना नहीं है जिसे करने में आपको कठिनाई महसूस हो। बस, कुछ चीजों को छोड़ना है और कुछ चीजों से खुद को जोड़ना है। अगर आप ऐसा कर लेंगे तो मेरा दावा है कि आपको दुनिया की कोई भी ताकत आगे बढ़ने से नहीं रोक पाएगी।

झूठ बोलना, बाहर की नुकसानदेह चीजें खाना-पीना, आपस में झगड़ा करना, दिनभर टी.वी. देखना, रात में देर से सोना, सुबह में देर से जागना, किसी भी चीज के लिए जिद्द करना-ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनसे आप हमेशा दूर रहें। अब मैं यह बताता हूं कि आपको क्या-क्या करना चाहिए? रोज सुबह में सूरज निकलने से पहले जाग जाना, माता-पिता व बड़े-बुजर्गों को प्रणाम करना, नहा-धोकर भगवान के सामने शीश झुकाना, ग्यारह बार ओ३म् बोलना, भारत माता की जय, वंदेमातरम्, जयहिंद के नारे लगाना, रोज समय से स्कूल जाना और समय पर अपना होमवर्क पूरा करना, शाम में आधा-एक घंटा खेलना-कूदना, फिर दो-तीन घंटे पढ़ाई करना, सादा व पौष्टिक खुराक लेना और रात में दस बजे तक सो जाना-यदि इन बातों को आप अपनाएंगे तो कुछ ही दिनों में अपने अंदर के बदलाव को देखकर चकित रह जाएंगे।

लगन, नियम और अनुशासन, जीवन को संवारने वाले ये तीन सबसे बेहतर फॉर्मूले हैं। एक विद्यार्थी के जीवन में इन तीनों की सबसे ज्यादा अहमियत होती है। लगन का मतलब है- हम जो कर रहे हैं, उसे बोझ समझकर नहीं, बल्कि खुशी-खुशी करते जाना। नियम का मतलब है-एक खास कायदे को अपनाए रहना अपने रुटीन को दुरुस्त रखना अनुशासन का मतलब है- लिमिट को क्रॉस न करना।

अगर आपको अपनी क्लास में अव्वल दर्जा पाना है तो आपके लिए किताबों का बस्ता बोझ नहीं होना चाहिए। किताबों से आपका लगाव उसी तरह बल्कि उससे भी बढ़कर होना चाहिए जितना स्कूल में दाखिले से पहले अपने मनपसंद खिलौनों से होता था। माता-पिता नाराज हो जाएंगे, स्कूल में डांट पड़ेगी-सिर्फ इसी को मन में रखकर जो विद्यार्थी पढ़ता-लिखता है, वह केवल दिखावा करता है और जो दिखावा करता है उसे आगे चलकर दर-दर की ठोकर खानी पड़ जाती है। इसलिए पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी होनी चाहिए, दिलचस्पी से ही पढ़ने-लिखने में आनन्द आता है और उसका नतीजा भी शानदार होता है।

लगन की तरह ही नियम के भी अपने फायदे हैं। पढ़ाई-लिखाई नियम से होनी चाहिए, रोज एक तय समय पर घर में भी पढ़ाई-लिखाई का सिलसिला जारी रहना चाहिए। आज पढ़े, कल नहीं, एक दिन पढ़ाई की, फिर एक सप्ताह तक टालते रहे-इस तरह का रवैया रखने वाले विद्यार्थी का कोर्स कभी पूरा नहीं हो पाता और कोर्स पूरा न होने का भय भी सताता रहता है। इसलिए एक नियम बना लें कि मुझे कब कितनी देर तक पढ़ना है और बाकी प्रोग्राम-खाना-पीना, खेलना-कूदना आदि का समय क्या होगा? एक बात को गांठ बांध लें कि एक तय रफ्तार में लगातार चलते रहने वाली चींटी भी ऊंचे पहाड़ की चोटी तक पहुंच जाती है।

इसी तरह विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का होना भी बेहद जरूरी है। अनुशासन के दायरे को लाघंने वाले विद्यार्थी को घर में भी सजा, डांट-फटकार मिलती है और स्कूल में भी, साथ ही उसकी अपनी तरक्की की रफ्तार भी थम जाती है। इसलिए अनुशासन का पालन करें, किसी भी कीमत पर अनुशासन के खिलाफ कदम न बढ़ाएं। हकीकत यही है कि अनुशासन ही इंसान को महान बनाता है, कामयाब बनाता है।

ये सारी बातें मैंने किसी किताब में नहीं पढ़ी हैं, बल्कि बचपन से ही इन्हें अपनाया है और आज 93वर्ष की उम्र में भी थोड़े-बहुत बदलाव के साथ ये सारी बातें मेरी जिंदगी में शामिल हैं। इसी का यह नतीजा रहा है कि कोई भी बुरी आदत मेरे करीब नहीं आ पायी और आज भी ठहाके लगाते हुए आपके बीच खड़ा हूं। मेरी तमन्ना बस यही है कि आप भी हमेशा अपने जीवन में ठहाके लगाते रहें, गुनगुनाते रहें, मुस्कुराते रहें। परमात्मा जब हमें जिंदगी देता है, तो बड़ी उम्मीदों के साथ देता है और अगर हम उसकी उम्मीदों पर खरा न उतरें, तो यह बड़ी भारी गलती होगी। इसलिए आपकी जिंदगी का मकसद सिर्फ दो वक्त की रोटी जुटाना नहीं, बल्कि एक नेक इंसान बनकर इस दुनिया की सेवा करना होना चाहिए और इसकी शुरुआत का सबसे सही वक्त अब शुरू हो चुका है। इसलिए संकल्प करें कि आगे से न अपने माता-पिता, दादा-दादी, ताऊ-चाचा और पड़ोसी आदि को शिकायत का मौका देंगे, न ही ये गुरुजन जो आपके सामने हैं, इन्हें शिकायत का मौका देंगे।

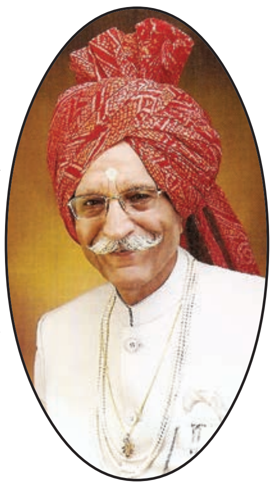

हर जगह, हर हालात में सौ फीसदी सही रवैया अपनाने से बड़ी तालीम मेरे ख्याल में और कुछ भी नहीं हो सकती और सबसे बड़ी तारीफ की बात तो यह है कि जो इस तालीम को पा लेता है, डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, साइंटिस्ट आदि की बड़ी-बड़ी डिग्रियां, बड़े-बड़े ओहदे उसे ही हासिल होते हैं। इसी के साथ यदि सेवा का, परोपकार का जुनून हमेशा बना रहे, तो वही मानव महामानव बन जाता है, महापुरुष बन जाता है, श्रीराम, श्रीकृष्ण, गौतम, महावीर, दयानन्द और गांधी बन जाता है, जिसे दुनिया सलाम करती है, सदियां सलाम करती हैं आने वाली पीढ़ियां सलाम करती हैं।

मैं आप सभी को तहेदिल से यह आशीर्वाद देता हूं कि एक योग्य शिष्य बनें, एक योग्य संतान बनें, एक नेक इंसान बनें, एक काबिल और कामयाब इंसान बनें ताकि इस सुंदर संसार को और भी सुंदर बना सकें। धन्यवाद

आपका अपना - महाशय धर्मपाल

बैण्ड बाजे के साथ रथ पर सवार होकर आयोजन स्थल पर पहुंचे महाशय धर्मपाल जी

पहचानिए आखिर कौन है असली महाशय धर्मपाल

वयोवृद्ध

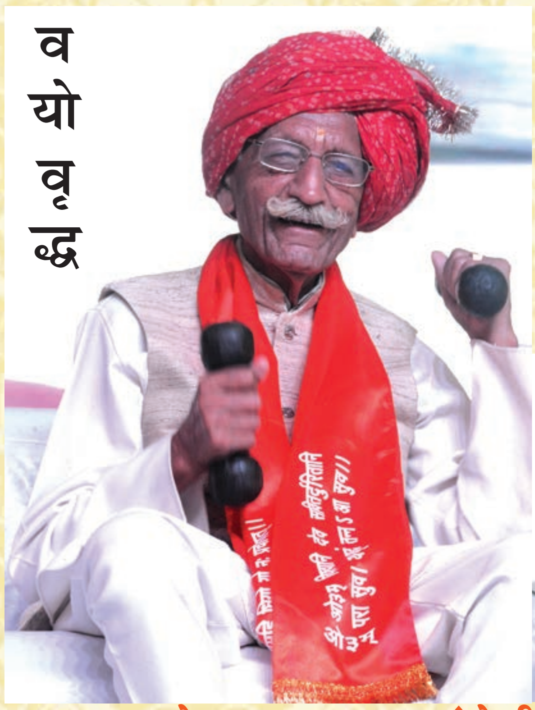

नौजवान

महाशय

धर्मपाल जी

सुन्दर मनमोहक सजावट - रंगोली, भव्य हवनकुण्ड, कार्यक्रम स्थल एस.एम. आर्य प.स्कूल का मुख्य द्वार

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 11 अप्रैल से रविवार 17 अप्रैल, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14/15 अप्रैल, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 13 अप्रैल, 2016

प्रतिष्ठा में,

मैं भी बनूंगा महाशय धर्मपाल : अपनाऊंगा आदर्श

अनुभव की सीख देते महाशय जी

आर्य अनाथालय के बच्चों के साथ

दिल्ली सभा की ओर से शुभकामनाएं

विद्यालय की ओर शुभकामनाएं

सार्वदेशिक के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी

पंजाब केसरी परिवार की श्रीमती किरण चोपड़ा जी

शुभकामनाएं देते सर्वश्री महाशय राजीव गुलाटी जी, प्रेम अरोड़ा जी, अनिल अरोड़ा जी, एस. पी. सिंह जी एवं श्री विद्यामित्र ठुकराल जी

आर्यजन महाशय धर्मपाल जी को जन्मोत्सव की शुभकामनाएं देते हुए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह